E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2024; 6(7): 174-177
Received: 10-06-2024
Accepted: 12-07-2024

डॉ. राजकुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग,
जनता विद्या मन्दिर गणपतराय
रासीवासिया महाविद्यालय,
चरखी दादरी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. राजकुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग,
जनता विद्या मन्दिर गणपतराय
रासीवासिया महाविद्यालय,
चरखी दादरी, हरियाणा, भारत

मुन्शी प्रेमचन्द के साहित्य में आर्थिक युग बोध

राजकुमार

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2024.v6.i7a.1697

सारांश
मुन्शी प्रेमचंद के प्रायः सभी उपन्यास और विशेषकर प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि और गोदान प्रमुखतया आर्थिक समस्या से ही अनुप्रमाणित हैं। सर्वप्रथम प्रेमचंद ने आर्थिक विषमता तथा शोषण की समस्या का प्रत्यक्ष चित्रण 'प्रेमाश्रम' में किया था। 'प्रेमाश्रम' में किसानों के आर्थिक शोषण की समस्या के विविध पहलुओं का चित्रण यथार्थ रूप में हुआ है और इस समस्या के समाधान की ओर भी प्रेमचंद ने स्पष्ट रूप से संकेत किया है। उस युग में जिन विविध मार्गों से किसानों का शोषण किया जाता था, उनका सजीव चित्र 'प्रेमाश्रम' में सफलता से अंकित हुआ है। उन्होंने जमींदारों की शोषण नीति का मार्मिक विश्लेषण किया है।

कुटशब्दः समस्या, आर्थिक, पूँजीवाद, ग्रामीण, कुटीर

प्रस्तावना
पूर्ण शोध–पत्र

प्रेमचंद ने अपने युग की समस्याओं को भली–भांति समझा था। देश में ऐसी संस्कृति का प्रवेश हो रहा था, जिसकी चकाचौंध से प्रभावित होकर समूची नई पीढ़ी बही चली जा रही थी। इससे अनेक नई समस्याएं उत्पन्न हो गई थी और समाज का ढांचा एक प्रकार से चरमराने लगा था, क्योंकि वह परम्परागत आदर्शों पर आधारित था। देश में पूँजीवाद का बोलबाला था और वर्ग–बैषम्य जीवन के प्रत्येक स्तर पर आधारित था। देश में पूँजीवाद के बढ़ते हुए प्रभाव ने एक ऐसी बुर्जुआ मनोवृत्ति उत्पन्न कर दी थी, जिसकी चपेट में एक प्रकार से प्रेमचंद का समूचा युग ही आ गया था। आर्थिक स्वतंत्रता की समस्या एक विकट समस्या थी। भारतीय समाज का आर्थिक ढांचा हिल चुका था। अंग्रेज सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण भारतीय जनता का भरपूर शोषण हो रहा था। प्रेमचंद युगीन भारत में अधिकांश उद्योग–धंधे व ग्रामीण कुटीर उद्योग नष्ट हो गए थे। भारत में प्रचलित अनेक घरेलू उद्योग–धंधे बड़े–बड़े कारखानों के उत्पादन की चुनौती का सामना न कर सकें। इनके लोग ऐसे घरेलू धंधों को छोड़ने पर मजबूर हो गए। उन्हें अन्ततः कारखानों में मजदूर बनना पड़ा या खेतिहर मजदूर होकर जीवनयापन करने लगे।

बड़े–बड़े औद्योगिक नगर बसाए गए थे। वहाँ काम करने वाले कारीगरों में से कुछ ने शिक्षा प्राप्त की ओर सरकारी नौकरी करने लगे। कुछ लोग कृषि करने लगे। इससे कृषि की जमीन पर दबाव बढ़ने लगा था। जोत पहले की अपेक्षा और छोटी हो गई थी। अतः स्पष्ट है कि प्रेमचंद युगीन भारत में 'खेती व उद्योग' दो ही मुख्य आर्थिक आधार थे। इंग्लैण्ड में हुई औद्योगिक क्रांति का प्रभाव भारत पर भी पड़ा, क्योंकि भारत ब्रिटेन का उपनिवेश था। ब्रिटेन के लिए भारत कच्चे माल की सबसे बड़ी मण्डी था। भारतीय किसान को वो ही फसलें उगानी पड़ती थी, जिनका प्रयोग इंग्लैण्ड के कारखानों में कच्चे माल के रूप में किया जाता था। विदेशों से कारखानों में बने माल के भारत आने पर भारतीय कुटीर उद्योगों पर भारी दुष्प्रभाव पड़ा, क्योंकि कारखानों में निर्मित माल सस्ता पड़ता था। इसलिए भारत के छोटे उद्योग धंधों में कमी आई और मांग घट गई। फलस्वरूप भारतीय उद्योग धंधे ठप्प होने लगे। अधिकांश कारीगर कृषक बन गए। 1990 से 1914 तक खाद्यान्नों की कीमतों में वृद्धि होने के कारण भारतीय कृषि में कुछ सुधार होने लगा। किंतु प्रथम विष्व युद्ध के आरंभ होते ही भारतीय कृषि फिर निराशाजनक स्थिति में चली गई। 1929 ई. में आए विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के दौर में भारतीय किसान की आर्थिक दशा निराशाजनक हो गई।

भारत ज्यादा साधन सम्पन्न न होने के कारण भारतीय कृषि प्रकृति पर निर्भर थी। वर्षा होना ही कृषि उत्पादन का मुख्य स्त्रोत था। इसलिए प्रेमचंदयुगीन आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी। अनेक बार अकाल पड़ने के कारण भी आर्थिक मंदी आई। उद्योग–धंधे ठप्प होते जा रहे थे, जनसंख्या वृद्धि तथा बेरोजगारी की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, जिसका सीधा असर आर्थिकता पर पड़ता है। शिक्षित युवा वर्ग में बेरोजगारी के कारण निराशा बढ़ रही थी। ब्रिटिश सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में किये गए सुधारों की गति धीमी थी।

संयुक्त परिवारों के विघटन के कारण जोत भूमि बहुत कम होती जा रही थी। इसलिए किसानों को साहुकारों से ऋण बना रहता था। उसकी फसल का अधिकांश भाग ऋण के ब्याज में ही चला जाता था। प्रेमचंद की कहानी 'सवा सेर गेहूँ' में इस तथ्य को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया था। 'कर्मभूमि' उपन्यास में प्रेमचंद ने किसानों की माली हालत का वर्णन किया है। किसानों की हालत गंभीर थी, माल–गुजारी या लगान देना कठिन हो गया था। उन्होंने विश्व होकर अपनी जमीनों से इस्तीफें दे दिए थे।

आर्थिक समस्याओं से संबंधित डॉ. नगेन्द्र ने प्रेमचंद के साहित्य पर अपने लेख ''प्रेमचंद'' में स्पष्ट लिखा है– ''प्रेमचंद के संपूर्ण साहित्य पर आर्थिक समस्याओं का प्रभुत्व है।''[1]

प्रेमचंद के प्रायः सभी उपन्यास और विशेषकर प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि और गोदान प्रमुखतया आर्थिक समस्या से ही अनुप्रमाणित हैं। सर्वप्रथम प्रेमचंद ने आर्थिक विषमता तथा शोषण की समस्या का प्रत्यक्ष चित्रण 'प्रेमाश्रम' में किया था। 'प्रेमाश्रम' में किसानों के आर्थिक शोषण की समस्या के इस समस्या के विविध पहलुओं का चित्रण यथार्थ रूप में हुआ है और इस समस्या के समाधान की ओर भी प्रेमचंद ने स्पष्ट रूप से संकेत किया है। उस युग में जिन विविध मार्गों से किसानों का शोषण किया जाता था, उनका सजीव चित्र 'प्रेमाश्रम' में सफलता से अंकित हुआ है। उन्होंने जमींदारो की शोषण नीति का मार्मिक विश्लेषण किया है। ज्ञानशंकर जैसे जमींदार क्रूरता एंव निर्दयता से किसानों का शोषण करते हैं, तो रायसाहब कमलानन्द ऐसी श्रेणी के जमींदार हैं, जो विचारों मे तो किसानों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं किन्तु व्यवहार में विवशता के नाम पर किसानों का शोषण करने से नहीं चूकते। गायत्री जमींदारों के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने ऐशोआराम की सामग्री जुटाने के लिए शोषण की नीति को सर्वथा उचित समझती है। आर्थिक शोषण की समस्या के विवधि रूपों का मार्मिक विश्लेषण करते हुए प्रेमचंद यह भी स्पष्ट करने से नहीं चूकते कि इस आर्थिक शोषण को बढ़ावा देने में अंग्रेजों का विदेशी शासन भी किसी प्रकार क्रियाशील है, क्योंकि साम्राज्यवादी शासकों का हित इसी बात में सुरक्षित था कि जमींदार और किसान में जो अंतर था वह किसी भी कारण से कम नहीं होना चाहिए, प्रत्युत अधिकाधिक बढ़ना चाहिए।

आर्थिक शोषण की समस्या को दूर करने के विविध उपायों की चर्चा भी प्रेमचंद ने अपने उपन्यास व कहानियों में की है। एक उपाय वह है जो प्रेमचंद तथा विश्व के अन्य लेखकों की स्मृति में बिल्कुल ताजा है और वह है रूस में अपनाया गया क्रांति का मार्ग जिसकी और प्रेमचंद ने संकेत मात्र किया है। दूसरा उपाय जो प्रेमचंद ने सुझाया है वह है साहसपूर्ण विरोध का। इस साहस की प्रेरणा किसानों को महात्मा गांधी से प्राप्त हुई थी। तीसरा मार्ग प्रेमशंकर का आदर्शवादी मार्ग था। प्रेमशंकर किसान और सरकार के बीच का दलाल नहीं बनना चाहता। वह किसानों के दोषों को दूर करते हुए उनकी उन्नति करने के प्रयत्नों में लग जाता है। वह एक नए समाज का निर्माण करता है। जिसमें सब एक–दूसरे के मित्र है। ''इसमें श्रम का आदर किया जाता है और सभी अपना काम अपने हाथों से करते हैं।''[2] ज्ञानशंकर इसे साम्यवाद का ही प्रयोग कहता है किन्तु प्रेमशंकर इसका प्रतिवाद करते हुए कहता है – ''यहाँ साम्यवाद की तो कभी चर्चा नहीं हुई है।''[3]

उस समय प्रेमचंद का यह विचार था कि – ''किसानों को मजदूर बनाने से कदाचित् उनकी समस्याएँ और जटिल बन सकती हैं। वे लघु उद्योगों के द्वारा भी किसानों को स्वावलम्बी बनाना चाहते हैं।''[4]

'रंगभूमि' उपन्यास के केंद्र में भी आर्थिक समस्या है। प्रेमचंद ने इसमें देहातों को आक्रांत करने वाले औद्योगिकीकरण की समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण किया है। प्रेमचंद ऐसे औद्योगिकीकरण के विरोधी थे, जो पूँजीवादी मनोवृत्ति से किया जाता है और जिसके परिणामस्वरूप न केवल देहात की पुरानी अर्थव्यवस्था में ही परिवर्तन हो जाता है, अपितु देहात के समस्त सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों का भी ह्रास हो जाता है। इस औद्योगिकीकरण के समर्थक उसके द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों का बड़ा ही सुन्दर चित्र प्रस्तुत करते हैं। जॉन सेवक कुंवर साहब को सिगरेट का कारखाना खोलने से होने वाले लाभों के बारे में समझाते हुए कहता है– ''जितनी जमीन एक आदमी अच्छी तरह जोत–बो सकता है, उसमें घर भर का लगा रहना व्यर्थ है। मेरा कारखाना ऐसे बेकारों को अपनी रोटी कमाने का अवसर देगा।''[5] प्रेमचंद ने औद्योगिकीकरण से वैयक्तिक लाभ उठाने वाले बनावटी देशभक्तों पर कटु व्यंग्य किया है। कुंवर साहब की आत्मा उनको कोसती है– ''बनिया मारे जान, चोर मारे अनजान।''[6]

सादगी से परिपूर्ण जीवन को अपनाने से ही मध्य वर्ग के लोग आर्थिक विपन्नता से मुक्त हो सकते हैं तथा जीवन का सच्चा आनन्द भी प्राप्त कर सकते हैं प्रेमचंद लिखते हैं – ''रमा को तो इस जीवन से इतना अनुराग हो गया है कि अब मिल जाए, तो शहर का नाम न ले।''[7]

देहात के किसानों के समान ही आर्थिक विषमता, दरिद्रता तथा धनाभाव से पीड़ित शहर के मजदूरों की समस्या का भी यथार्थ चित्रण 'कर्मभूमि' में देखने को मिलता। अमरनाथ शहर की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं – ''शहर के तीन–चौथाई आदमी एक चौथाई के लिए अपना रक्त जला रहे हैं। इसका प्रसाद यही मिलता है कि उन्हें रहने के लिए स्थान नहीं। यह किसी जिम्मेदारी है कि शहर के छोटे–बड़े, अमीर–गरीब सभी आदमी स्वस्थ रह सकें ?''[8]

'गोदान' में मुख्य रूप से आर्थिक समस्या का ही चित्रण किया गया है। 'गोदान' की प्रमुख समस्या तथा शहर के जीवन को आक्रान्त करने वाली आर्थिक समस्या ही है। 'गोदान' के प्रारम्भ में ही होरी तथा धनिया के अभावग्रस्त जीवन का यथार्थ चित्र प्रेमचंद ने अंकित किया है। पेट की चिंता के कारण धनिया छत्तीस वर्ष की उम्र में ही बूढ़ी बन गई है। होरी आर्थिक चिंताओं से सदैव ग्रस्त रहता है। होरी के अभावग्रस्त जीवन का कारण चित्र अंकित करते हुए प्रेमचंद ने उसी के द्वारा सूचित किया है– ''अगर संतोष था वो यही कि यह विपत्ति अकेले उसी के सिर न थी। प्रायः सभी किसानों का यही हाल था। अधिकांश की दशा तो इससे बदतर थी।''[9] यह बुरी अकेले होती की ही नहीं है, बल्कि समस्त सर्वहारा वर्ग की आर्थिक दुर्दशा है।

''गोबर रूपा के ब्याह के समय जब गांव जाता है तब देखता है कि ऐसा एक आदमी भी नहीं, जिसकी रोती सूरत न हो – जीवन में न कोई आशा है न कोई उमंग, जैसे उनके जीवन के सोते सूख गए है– भविष्य अंधकार की भांति उनके सामने है। उसमें उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझता।''[10]

गोदान के प्रो. मेहता भी इसी तरह सोचते हैं : ''काश! ये आदमी ज्यादा और देवता कम होते तो यो न ठुकराए जाते।''[11]

शहर में दिखाई देने वाली धन लिप्सा की समस्या को उजागर करने के लिए प्रेमचंद ने समस्या के समाधान, दुष्परिणामों का मार्मिक विश्लेषण करते हुए खन्ना की पत्नी गोविन्दी कहती है– ''धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सके, तो यह कोई महंगा सौदा नहीं है।''[12]

जब धन ही जीवन का साध्य बन जाता है, तब वह अनेक प्रकार के दुःखों को जन्म देता है इसलिए मेहता कहते हैं, ''मेरे लिए धन केवल उन सुविधाओं का नाम है, जिनमें मैं अपना जीवन सार्थक कर सकूं। धन मेरे लिए बढ़ने और फलने–फूलने वाली चीज नहीं, केवल साधन है।''[13]

प्रेमचंद के अन्य उपन्यासों में यद्यपि समस्याएं भिन्न हैं, तो भी परोक्ष रूप से उन पर आर्थिक समस्या का प्रभाव है 'निर्मला' में दहेज प्रथा अनमेल विवाह की समस्या है, जिसका मूल कारण

निर्मला के पिता का अर्थाभाव ही है। 'प्रतिज्ञा' में विधवा की आर्थिक समस्या का विश्लेषण प्रेमचंद ने किया है। 'कायाकल्प' में कोई एक केन्द्रीय समस्या नहीं है। फिर भी मनोरमा और अहकमा की धनलिप्सा के दुष्परिणाम दिखाने में प्रेमचंद नहीं चूके। इस प्रकार प्रेमचंद के प्रायः हर उपन्यास के केंद्र में उनकी अर्थमूलक दृष्टि दिखाई देती है।

इसमें संदेह नहीं कि प्रेमचंद ने आर्थिक समस्याओं के उद्घाटन के लिए जिस युग बोध दृष्टि से काम किया है, उस पर मार्क्सवाद का काफी प्रभाव परिलक्षित होता है। मार्क्स के समान ही प्रेमचंद के मन में श्रमजीवी सर्वहारावर्ग के प्रति अपार सहानुभूति है और उनका शोषण करने वाले पूँजीपतियों, साहूकारों तथा जमींदारों के प्रति उतनी ही घृणा की भावना है। प्रेमचंद आर्थिक विषमता को समाज का एक सबसे बड़ा अभिशाप मानते हैं। समाज की उन्नति के लिए वर्गविहीन समाज की आवश्यकता को भी वे प्रतिपादित करते हैं। डॉ. नगेन्द्र ने भी प्रेमचंद विषयक अपने लेख में इस बात को स्पष्ट किया है कि उन्होंने ''अर्थ वैषम्य को सामाजिक जीवन की ग्रन्थि नहीं बनने दिया।''[14]

प्रेमचंद ने आर्थिक विषमता या समस्या के विविध आयामों का अपने अलग–अलग उपन्यासो में किया है। उन्होंने ऐसे जीवन्त पात्रों के माध्यम से समस्या के विविध आयामों को चित्रित किया है कि समस्या इतने यथार्थ रूप में समाज के सामने आए और उनको प्रभावित करे। इसी जीवन्त परिवेश के कारण ही प्रेमचंद का साहित्य अत्यंत प्रभावोत्पादक बन गया है। प्रेमचंद ने परिवेश को जिस सजीव रूप में प्रस्तुत किया है, उससे उनके आर्थिक समस्या विषयक सूक्ष्म, व्यापक एवं गहरे ज्ञान का परिचय मिलता है। यह ज्ञान उन्हें अनुभवों से प्राप्त हुआ था। वे स्वयं देहात के रहने वाले थे। निम्न–मध्य वर्ग के अर्थाभाव का उन्हें सामना करना पड़ा था। किसानों तथा श्रम–जीवियों की समस्याओं को उन्होंने बिल्कुल नजदीक से देखा था। इसीलिए उन्होंने अपने साहित्य में आर्थिक समस्या के जिन विविध पहलुओं का उद्घाटन किया है, उनमें निरी बौद्धिकता नहीं है न उनका दृष्टिकोण ही कोरा वैज्ञानिक है। यही कारण है, उनके उपन्यासों में समाज–जीवन की आर्थिक समस्या के विविध पहलुओं का अत्यंत सजीव, प्रभावोत्पादक एवं मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। आर्थिक समस्या के प्रति देखने का... प्रेमचंद जैसा दृटिकोण उनके युग के हिन्दी उपन्यासकारों में अपवाद से ही पाया जाता है।

4.2.1 देश की आर्थिक दुर्व्यवस्था :–

प्रेमचंद युग में भारतीय समाज का आर्थिक ढांचा हिल चुका था। अंग्रेजी सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण भारतीय जनता का भरपूर शोषण हो रहा था। प्रेमचंद युगीन समाज में अधिकांश उद्योग–धंधे व ग्रामीण कुटीर उद्योग नष्ट हो चुके थे। अंग्रेजों की भूमि स्थायी बंदोबस्त के कारण जो 'जमींदार वर्ग' उत्पन्न हो गया था, इस वर्ग ने भूमि का लगान वसूल करने में अंग्रेजों की सहायता की थी। जमींदार वर्ग को कृषकों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी। वे सरकार और किसानों के बीच मध्यस्थता का काम करते थे। लगान वसूल करने के लिए कारिंदे व चपरासी नियुक्त किए हुए थे, वे भी किसानों का खूब शोषण करते थे। देशी रियासतों मे तो किसानों की दशा और भी सोचनीय थी। रयैतवाड़ी बंदोबस्त के क्षेत्रों में किसानों की आर्थिक स्थिति, स्थायी बन्दोबस्त के क्षेत्रों जैसी ही थी। महाजनों को कुर्की के अधिकार और भूमि हस्तांतरण संबंधी नियमों के कारण भी खेतिहार मजदूरों की संख्या बढ़ती जा रही थी। चाय, रबड़, काफी आदि के बागों में काम करने वाले मजदूर भी शोषण और अत्याचार के शिकार थे। मजदूर वर्ग की गतियों का वर्णन प्रेमचंद साहित्य में यथा स्थान यथार्थ रूप में किया गया है। मजदूर वर्ग के संघर्षों के इतिहास की झलक प्रेमचंद के उपन्यासों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। प्रेमचंद ने भारतीय समाज में बदलते आर्थिक परिवेश के सजीव चित्र अंकित किये हैं।

प्रेमचंदयुगीन भारत में मध्य वर्ग दो भागों में बंटा हुआ था– उच्च मध्य वर्ग तथा निम्न मध्य वर्ग। उच्च वर्ग में डॉक्टर, वकील, प्रोफेसर आदि आते हैं। निम्न मध्य वर्ग सरकारी नौकरी में कार्यरत हैं और निश्चित वेतन प्राप्त करते हैं। मध्य वर्ग अपनी आर्थिक परिस्थितियों से अत्यधिक प्रभावित था। यह अपने सामर्थ्य से बढ़कर दिखने का प्रयास करता था। एक यह वर्ग प्राचीन सामाजिक परंपराओं, दहेज प्रथा, धार्मिक अनुष्ठान आदि का अंधाधुंध पालन करता है तो दूसरी ओर आर्थिक तनाव का शिकार भी रहता है। प्रेमचंद युगीन परिवेश आर्थिक विकास की गति धीमी थी। इसका प्रमुख कारण था कि बैंकिंग व्यवस्था पर ब्रिटिश सरकार का नियंत्रण था। ब्रिटिश सरकार का लक्ष्य अधिक से अधिक लाभ कमाना था। उसे भारतीय आर्थिक विकास की चिंता नहीं थी। इसके अलावा भारत से इंग्लैण्ड को नजराने के रूप में भेजी जाने वाली राशि, ऋण का ब्याज और घरेलू खर्च की राशि कम होने के बाद और किसानों के गिर जाने से दुगुनी हो गई तथा भारत से बड़ी निर्ममता से वसूल किया गया। प्रथम विश्व युद्ध के बाद मंहगाई बढ़ गई थी। किंतु कीमतों की वृद्धि के मुकाबले में मजदूरों की मजदूरी में वृद्धि नहीं की गई। फलस्वरूप मजदूरों का जीवन स्तर गिरता चला गया।

किसानों को विवश होकर महाजनों, साहूकारों से ऋण लेकर गुजारा करना पड़ता था। इससे महाजन वर्ग किसानों का मनमाना शोषण कर रहा था। एक बार जो किसान किसी महाजन से ऋण ले लेता था, वह आजीवन ऋणी बना रहता था। उसकी फसल का अधिकांश भाग ऋण के ब्याज उतारने में ही चला जाता था। देशी रियासतों में तो किसान व मजदूरों की आर्थिक दशा और भी सोचनीय थी। रवैतवाड़ी बंदोबस्त के क्षेत्रों में किसानो की आर्थिक स्थिति, स्थायी बंदोबस्त के क्षेत्रों जैसी ही थी। वहाँ जमींदार वर्ग फलफूल रहा था। महाजनों को सम्पति की कुर्की के अधिकार और भूमि हस्तांतरण संबंधी नियमों के कारण भी खेतीहर मजदूरों की संख्या बढ़ती जा रही थी। चाय, रबड़, कॉफी आदि के बागों में काम करने वाले मजदूर भी शोषण और अत्याचार का शिकार थे।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में ग्रामीण एवं नगरीय जीवन की आर्थिक दुर्व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने 'पूस की रात', 'सद्गति', 'सवा सेर गेहूँ, 'उपदेश', 'बलिदान', 'समरयात्रा', 'कफन', 'मुक्ति मार्ग' आदि में जमीदारों महाजनों द्वारा किसानों के शोषण के कारण उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति को उजागर किया। किसानों की ऋण ग्रस्तता, आपसी फूट, ईर्ष्या आदि से उत्पन्न आर्थिक संकटों, का यथार्थ वर्णन पाया जाता है। आर्थिक संकट के कारण ही कृषि का धंधा छोड़कर मजदूर बनने की किसान की विवशता को भी उद्घाटित किया है। प्रेमचंद ने स्पष्ट किया है गांव में किसानों, मजदूर की आर्थिक दुर्दशा के लिए जमींदार, उसके कारिंदे, चपरासियों आदि का शोषण, बेगार प्रथा ही आर्थिक जिम्मेदार थी। 'समर यात्रा' कहानी में नोहरी के माध्यम से किसानों की आर्थिक स्थिति का चित्रण करते हुए लिखा है – हम और तुम क्या अभी बूढ़े होने जोगे थे ? हमें पेट की आग ने जलाया है। बोलो ईमान से, यहाँ कितने आदमी हैं, किसी ने इधर छः महीने से पेट–भर रोटी खाई ह ? घी किसी को सूंघने को मिला है ?

इसी तरह 'पूस की रात' कहानी में हल्कू की पत्नी के द्वारा कहे गए ये शब्द किसान की दयनीय आर्थिक दशा को उजागर कते है – ''न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने में ही नहीं आती। मैं कहती हूँ तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर–मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है।''[15]

'कफन' कहानी में प्रेमचंद ने आर्थिक शोषण के कारण निम्न वर्ग में बढ़ती हुई निठल्लेपन की प्रवृति का यथार्थ चित्रण किया है– ''हां बेटा, बैंकुठ में जाएगी। किसी को सताया नहीं। किसी को

दबाया नहीं। मरते–मरते हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गयी और मंदिरों में जल चढ़ाते है।''[16]

निष्कर्ष

गोदान उपन्यास में ग्रामीण भारत को कठोर सच्चाईयों, किसानों के शोषण और सामाजिक अन्याय का यथार्थ वादी चित्रण है, जहां होरी जैसे किसान जीवन भर संघर्ष के बाद भी अपनी मूलभूत आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते और अंततः पूंजीवाद के शोषण के शिकार होते हैं। यह उपन्यास सामाजिक न्याय, समानता और श्रम के महत्व को उजागर करता है।

प्रेमचंद ने गोदान में भारतीय ग्रामीण जीवन की गरीबी, शोषण और सामाजिक कुरीतियों का जीवंत चित्रण किया है, जो समाज के कटु सच को सामने लाता है। उपन्यास में जमींदार, महाजन और पूंजीपति वर्ग द्वारा किसानों के निरंतर शोषण को दिखाया गया है, जिससे होरी जैसा किसान जीवन भर कर्ज और कष्टों में फंसा रहता है। होरी की गाय रखने की बुनियादी इच्छा भी पूरी नहीं हो पाती, जो उसकी और उसके जैसे अन्य किसानों के अधूरे सपनों का प्रतीक है।

गोदान इस बात पर जोर देता है, कि समाज में सच्ची धार्मिकता और न्याय तभी संभव है, जब सभी वर्गों को सम्मान अधिकार और सम्मान मिले उपन्यास में ग्रामीण/शहरी दोनों स्तरों पर पूंजीवादी के बढ़ते प्रभाव और उसके कारण होने वाले शोषण को दर्शाया गया है। अंततः गोदान, शोषण और असमानता के विरूद्ध एक गहरा संदेश देता है, और बताता है कि दूसरों को लूटने के बजाय, उन्हें सुखी करने में जीवन का असली सुख है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. नगेन्द्र (1944) विचार और विवेचन, गौतम बुक डिपो दिल्ली, पृ. 39
2. प्रेमचंद (1962) प्रेमाश्रम, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली पृ. 389
3. वहीं, पृ. 390
4. वहीं, पृ. 86
5. प्रेमचंद (1961) रंगभूमि, साधना प्रकाशन, दिल्ली पृ. 44
6. वहीं, पृ. 47
7. प्रेमचंद (1964) गबन पृ. 114–115, सरस्वती प्रेस, काशी (वाराणसी)
8. प्रेमचंद (1964) कर्मभूमि, महामाया प्रकाशन, जांलधर पृ. 376
9. प्रेमचंद (1961) गोदान, अमित पॉकेट बुक्स, जालंधर पृ. 40
10. वहीं, पृ. 357
11. वहीं, पृ. 357
12. प्रेमचंद (1961) गोदान, अमित पॉकेट बुक्स, जालंधर पृ. 297
13. वहीं, पृ. 64
14. डॉ. नगेन्द्र (1944), विचार और विवेचन, गौतम बुक डिपो, दिल्ली पृ. 90
15. प्रेमचंद (1 जनवरी,2013) पूस की रात, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृ. 73
16. प्रेमचन्द, कफन, पृ. 7